अधिमास, मलमास अथवा पुरुषोत्तम मास

भारतीय कैलेंडर में संवत्सर गणना व अन्य ज्योतिषीय , खगोलीय गणनाओं के लिए सौर वर्ष का प्रयोग होता है, वहीं तीज त्योहारों के लिए चांद्र मास के अनुसार मनाई जाती हैं। एक सौर वर्ष = 365 दिन 6 घंटे का होता है; वहीं एक चान्द्र वर्ष 354 दिन 9 घंटे का होता है।

इस प्रकार दोनों वर्षमानों में प्रतिवर्ष १० दिन , ५३ घटी, २१ पल दिन ११ अर्थात लगभग)) का अन्तर पड़ता है। इस अन्तर में प्रत्येक 32 माह 16 दिन और 4 घड़ी (2.5 घड़ी = 1 मिनट) के बाद एक अतिरिक्त चांद्रमास जोड़ने के पश्चात सूर्य और चांद्र वर्ष बराबर हो जाते हैं।

सूर्य और चांद्र मास में समानता लाने के लिए एक चांद्रवर्ष जोड़े गए अतिरिक्त मास जोड़ने से इस संवत्सर में १२ मासों के स्थान पर १३ मास का हो जाता है। इस बढ़े हुए तेरहवें चंद्र-मास को 'अधिमास, 'पुरोषोत्तम-मास' अथवा 'मलमास' कहते हैं।

एक महीने का अधिमास अपनी मर्ज़ी से घटाया या जोड़ा नहीं जाता। इसका भी नियम है-

अधिमास का नियम- किन्हीं भी दो पक्षों (शुक्ल और कृष्ण पक्ष) जब सूर्य की संक्रांति नहीं पड़ती तब ही अधिमास जोड़ा जाता है।

उदाहरण- संवत 2075 या सन्1918 अधिमास वर्ष है। इस वर्ष मेष संक्रांति 14 अप्रैल वैशाख कृष्ण-पक्ष त्रयोदशी को होगी तथा ज्येष्ठ माह 1 मई ज्येष्ठ कृष्ण-पक्ष प्रतिपदा से प्रारम्भ होगा। दिनांक 15 मई ज्येष्ठ अमावस्या को वृषभ-संक्राति होगी। 15 मई अमावस्या के बाद अगली मिथुन संक्रांति दिनांक 13 जून द्वितीया को पड़ेगी। इस प्रकार हम देखते हैं कि 15 मई की अमावस्या के बाद 12 जून की अमावस्या (दो पखवारों) में सूर्य की संक्रांति नहीं हुई। अतः 15 मई से 12जून का पखवारा 'अधिमास माना जाएगा।

मेष संक्रांति के बाद 1 मई से 15 मई तक शुद्ध ज्येष्ठ 16 मई से 12 जून तक संक्रांति न होने से 16 मई से 13 जून तक 'अधिमास। 13 जून की मिथुन संक्रांति के बाद यानि 14 जून से शुद्ध ज्येष्ठ मास प्रारम्भ होकर अगली पूर्णिमा 28 जून तक चलेगा। इसके बाद आषाढ़ कृष्ण-पक्ष प्रतिपदा ,29 जून को विधिवत आषाढ़ मास प्रारम्भ हो जाएगा।

अधिक जानकारी- सौर वर्ष- सूर्य मेष से मीन 12 राशियों का भ्रमण 365 दिन और 6 घंटो में पूरा करता है। इस अवधि को एक सौर वर्ष या संवत्सर कहते है।

चंद्र मास- चंद्रमा 27 नक्षत्रों (चित्रा से फाल्गुनी तक) का भ्रमण लगभग 30 दिनों मे पूरा करता है। इस अवधि को चंद्र-मास कहते हैं।

चंद्र-महीनों का नामकरण- कुल 27 नक्षत्रों मे से जिस नक्षत्र मे पूर्णिमा पड़ती है उस महीने का नाम उसी नक्षत्र पर रखा गया है। धातव्य है कि कुल 27 नक्षत्रों पूर्णिमा केवल चित्रा, विशाखा...फाल्गुनी में ही पड़ती है इसलिए इन महीनों के नाम इन्हीं नक्षत्रों के नाम पर हुए ; यथा- चित्रा से चैत्र, विषाखा से वैशाख, ज्येश्ठा से ज्येष्ठ...फाल्गुनी से फाल्गुन माह जाना जाता है।